T.D.C Part-I, Paper II

APRIL 2021

M	T	W	T	F	S	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

WK 10 (061-304)

2021 • MARCH • TUESDAY 02

Q. प्रथम दो स्टुअर्ट राजाओं के समय राजा एवं संसद के बीच संघर्ष के कारणों का परीक्षण करें।

* First half of the 17th century का मतलब हुआ के 1603 से 1649 ई० तक के राजा और पार्लियामेन्ट के बीच लड़ाई के कारणों का वर्णन करना।

इस अवधि में स्टुअर्ट-वंश के दो राजा हुए जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम। इस दोनों राजाओं और पार्लियामेन्ट के बीच हमेशा लड़ाई चलती रही। इन झगड़ो के निम्नलिखित कारण थे :-

① राजा का दैविक अधिकार : 1603 ई० में एलिजबेथ की मृत्यु हुई और स्काटलैण्ड का सम्राट जेम्स छठा इंगलैण्ड का सम्राट जेम्स प्रथम बना। इसके मरने के बाद उसका पुत्र चार्ल्स प्रथम गद्दी पर बैठा। ये दोनों राजा आजीवन पार्लियामेन्ट के साथ लड़ते रहे। इस झगड़े का कारण प्रधानतः राजा के दैविक अधिकार थे। दोनों राजा अपने को ईश्वर का प्रतिनिधि समझते थे। वे कहते थे कि उनका जन्म प्रजा पर शासन करने के लिये ही हुआ है। वे आज्ञा दे सकते हैं परन्तु मनुष्य में सामर्थ्य नहीं कि वह राजा को आज्ञा दे। अधिकार केवल राजा के ही होते हैं, किसी प्रजा-जन को नहीं। प्रजा का काम केवल राजा की आज्ञा का पालन करना है। जेम्स प्रथम ने यह परिपाटी चलायी जो चार्ल्स प्रथम ने भी लागू किया। परन्तु जनता ने अनेक विद्वानों द्वारा सीखा था कि राजा को जनता की इच्छा पर शासन करने का अधिकार है तथा जनता की इच्छा के विरुद्ध वह राज्य करने का अधिकारी नहीं है।

APRIL

Scanned with CamScanner

(062-303) WK 10

03 WEDNESDAY • MARCH • 2021

FEBRUARY 2021

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28						

(2) मध्यम वर्ग में जागृति :- ट्यूडर राजाओं ने ~~प्रथम~~ मध्यम वर्ग को ऊँचा उठाना शुरू किया और उच्च वर्ग को दबाना शुरू किया। यह कारण था कि मध्यम वर्ग ट्यूडर राजाओं का समर्थन करता था। धीरे-धीरे मध्य वर्ग शक्तिशाली होता गया। उसके पास विद्या तथा धन का संग्रह हो गया था। उसने राजनीति में भी सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू कर दिया था।

(3) आर्थिक कठिनाइयाँ :- ट्यूडर वंश के समय में जनता अनेक वर्ष - युद्धों तथा बाहरी युद्धों के कारण दबी-दबी रहती थी। वह शक्तिशाली राजा के पक्ष में थी और सुख-शान्ति के लिये हर तरह की स्वतन्त्रता राजा पर निछावर करने को तैयार रहती थी। यदि राजा अनुचित ढंग से रूपया वसूल करता तो जनता चुप रहती थी लेकिन स्टुअर्ट राजा धन के अपव्यय के कारण आर्थिक कठिनाईयों में घिरे रहते थे।

(4) राजाओं का चरित्र :- जेम्स प्रथम अधिक बुद्धिमान तथा योग्य शासक माना जाता ~~था~~ है परन्तु वह घमण्ड से चूर रहा करता था। वह पर्लियामेन्ट को एक स्कूल और अपने को उसका अध्यापक समझता था। पर्लियामेन्ट के सदस्य उसके उपदेशों से तंग आ गये थे। इसके अलावे अंग्रेजी सभ्यता से वह अनभिज्ञ था। अतः वह जनता का प्रियपात्र नहीं बन सका। चार्ल्स प्रथम एक राजनीतिज्ञ न था। वह हठी, क्रोधी तथा अभिमानी राजा था। वह अपना अभिप्राय ऐसे शब्दों में पार्लियामेन्ट के सामने रखता

Scanned with CamScanner

इंगलैण्ड का इतिहास

था कि संसद के सदस्य उससे बिगड़े खड़े होते थे। अतः उसे अपने हठ के कारण ही अपना सिर देना पड़ा।

(5) धार्मिक नीति : जेम्स प्रथम इस बात को समझता था और वह एंगलिकन चर्च का पक्षपाती था परन्तु एंगलिकन चर्च के अलावे कैथोलिक और प्यूरिटन भी इंगलैण्ड में काफी संख्या में थे।

(6) दोनों की कमजोर वैदेशिक नीति : स्टुअर्ट राजा लोग अपने स्वार्थ के आगे देश का स्वार्थ भूला देते थे। उनकी वैदेशिक नीति अपने स्वार्थ पर आधारित थी। वे जनता को जबर्दस्ती अपनी नीति पर चलाना चाहते थे। फ्रांस एक कैथोलिक देश था। जनता प्रोटेस्टेंट देशों से मित्रता रखना चाहती थी। फ्रांस या अन्य कैथोलिक देश था।

(7) राजनीतिज्ञता का अभाव : स्टुअर्ट राजाओं जनता की भावना का ख्याल न रखा। वे समय तथा अवसर का भी कभी उपयोग करना नहीं सीखे। अपनी धुन में वे योग्य व्यक्तियों की भी परख न कर सके।

(8) राजा और उसका मन्त्रिमण्डल :- लंकास्टर तथा चार्ल-वंश के समय पार्लियामेन्ट की शक्ति बहुत बढ़ गई थी। वह कई मन्त्रियों पर मुकदमा चला चुकी थी। ट्यूडर काल में भी पार्लियामेन्ट ने यह अधिकार नहीं छोड़ा था। हेनरी आठवाँ ने अपने मन्त्रियों को पार्लियामेन्ट के आधार पर पदच्युत किया था।

Scanned with CamScanner

T.D.C Part I, Paper II

(064-301) WK 10

05 FRIDAY • MARCH • 2021

FEBRUARY 2021

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28						

(9) चुनाव में हस्तक्षेप : स्टुअर्ट राजाओं ने पार्लियामेन्ट के चुनाव में अपनी टाँग अड़ाई। वे दबाव डालकर अपने मत के लोगों को पार्लियामेन्ट में आने की सुविधा देते थे। पार्लियामेन्ट ने इसका विरोध किया परन्तु जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम ने उनका ध्यान कभी न किया।

(10) विदेशी आक्रमण के भय का अभाव : जनता को अब अपने अधिकारों की चिन्ता शेष रह गई थी। जब जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम ने अपनी मनमानी कर जनता पर अत्याचार करना शुरू किया तो वह इस अत्याचार को न सह सकी।

(11) राजा के न्यायालय :- जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम अपने को देश के नियम से ऊपर समझते थे। अतएव वे राजा के नियमों की बराबर अवहेलना करते थे। पार्लियामेन्ट राजा के शासन में सहायता नहीं देती थी। इसलिए अपने शासन के लिए उन्हें न्यायालय की आधार दिखाई देते थे। पुराने न्यायालय, कोर्ट ऑफ हाई कमीशन, Court of high Chamber, Council of North और कौंसिल ऑफ वेल्स पर वे पूरा अधिकार रखते थे जो उनकी इच्छानुसार राज्य के विद्रोहियों को कठोर दंड देते थे। इन न्यायालयों के कारण जनता राजा से असंतुष्ट थी।

(12) प्यूरिटनों का संसद में बहुमत :- पार्लियामेन्ट में प्यूरिटनों की शक्ति बढ़ती जाती थी। वे प्रजातन्त्र के पक्षपाती थे और राज्य में सुधार करना चाहते थे।

Scanned with CamScanner

B.A. Honours Part - I, Paper-II

(13) फौजी नियम : चार्ल्स प्रथम ने विलिंग नियम के अनुसार फौजी सिपाहियों के सहायतार्थ कर लगाये। राज्य को फौजी नियम (Martial Law) के अनुसार देश में सभी कानूनों को समाप्त करने का अधिकार था।

(14) अनुचित ढंग से धन संग्रह :- जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम ने जनता से अनुचित ढंग से धन एकत्र किया। उन्होंने बलात ऋण तथा जबर्दस्ती उपहार से लिये। ठीके बेच कर, उपाधियाँ बेच कर उसने काफी धन एकत्र किया था। पार्लियामेन्ट ने राजा का विरोध करना प्रारम्भ किया और अन्ततः संवैधानिक राज्य स्थापित कर राजा के सभी अनुचित अधिकारों को समाप्त कर दिया।

Dr. Digambar Jha
Dept. of history
S.R.A.P College bara (chakia)
(E.C.)

Scanned with CamScanner